# डॉ. दिनेश त्रिपाठी 'शम्स'
## बाँसी, उत्तर प्रदेश


## ग़ज़ल

(1)

जिस्म में बाक़ी अगर ताक़त नहीं रह जाएगी ,
फिर किसी भी काम की दौलत नहीं रह जाएगी ।
आज जब मिलने की' फ़ुर्सत है तो' चाहत ही नहीं ,
कल अगर चाहत जगी फ़ुर्सत नहीं रह जाएगी ।
ख़त्म कर डाला गया सारे अंधेरों को अगर ,
रोशनी की फिर कोई क़ीमत नहीं रह जाएगी ।
सिर्फ़ अपने आप का ही फ़ायदा देखा अगर
फ़ायदा होगा मगर बरकत नहीं रह जाएगी ।
आपके आमाल ही बस साथ देंगे आपका ,
आख़िरत के वक़्त ये उम्मत नहीं रह जाएगी ।
आप क़ुदरत को मिटाने पर तुले हैं स्वार्थ में
आप मिट जाएंगे' गर क़ुदरत नहीं रह जाएगी ।
जिसके' दिल में राम को पाने की' हसरत जग गई ,
उसके' दिल में फिर को'ई हसरत नहीं रह जाएगी ।
ज़िन्दगी का ज़ाविया बदलो वगरना 'शम्स' जी
आपके अश'आर में नुदरत नहीं रह जाएगी

(2)

फूल – सी नाज़ुक है' कांटों के हवाले हो गई
जिंदगी अनजान चाहों के हवाले हो गई ।
जब कभी भी जिक्र छेड़ा है किसी ने आपका ,
भावना रंगीन यादों के हवाले हो गई ।
अब हक़ीक़त से चुराती फिर रही है जो नज़र
ये सियासत कोरे' वादों के हवाले हो गई ।
दोस्ती के फ़र्ज़ को आखिर निभाना है उसे
आस्तीं तो ख़ुद ही' सांपों के हवाले हो गई ।
वर्जनाएं तोड़ करके बेख़ुदी में कामना ,
प्यार की मासूम बाहों के हवाले हो गई ।
भूलकर भी दीन–दुखियों से न रखती वास्ता ,
अफ़सरी तो सिर्फ़ चमचों के हवाले को गई ।
मुल्क़ की कोई समस्या जिनको' दिखती ही नहीं ,
अब सियासत ऐसे' अंधों के हवाले हो गई ।
जब उजालों ने दिया धोखा तो क्या करती भला ,
ज़िन्दगी आख़िर अंधेरों के हवाले हो गई ।
एक लड़की की तरह इस दौर की जम्हूरियत ,
हो विवश बेख़ौफ़ गुंडों के हवाले हो गई ।